https://www.echetana.com/Vol.-08, No.-04, *October-December 2023*, pp. 73-74

CHETANA
INTERNATIONAL JOURNAL OF EDUCATION (CIJE)

Peer Reviewed/Refereed Journal
(ISSN: 2455-8729 (E) / 2231-3613 (P))

Impact Factor
SJIF 2023 - 7.286

Prof. A.P. Sharma
Founder Editor, CIJE
(25.12.1932 - 09.01.2019)

भक्तिकालीन रचनाकारों के काव्य में नारी चेतना का अध्ययन

नंद भंवर राठौड़
रिसर्च स्कोलर, शिक्षा विभाग
ज्योति विद्यापीठ, जयपुर, राजस्थान
डॉ निरूपमा हर्षवर्धन
प्रोफेसर, शिक्षा विभाग
ज्योति विद्यापीठ, जयपुर, राजस्थान
Email- rathodnandbhanwar@gmail.com, Mobile- 9024531700

First draft received: 12.11.2023, Reviewed: 18.11.2023, Accepted: 28.11.2023, Final proof received: 29.12.2023

सार-संक्षेप

नारी परिवार में रहते हुए अनेक प्रकार की भूमिकाएं अदा करती है। वह जो चाहे भूमिका निभा सकती है वह एक माँ, पत्नी, बहू होने के साथ–साथ एक बेहतर अध्यापिका, जरूरत पडने पर स्वास्थ्य कर्मी, एक उच्च कोटी की प्रबंधक, एक अच्छी सहपाठी इनके अलावा न जाने कितने ही किरदार अपनी रोजमर्रा की जिन्दगी में निभाती है कुछेक पंक्ति इनके लिए मशहूर है – नारी एक रूप अनेक यह पंक्ति नारी पर बिलकुल सही बैठती है क्योकि नारी ही है जिसमें सहनशीलता पुरूषों से कई गुना अधिक होती है। जीवन में आने वाले हरेक दुख स्त्री सहन कर जाती है और हर चुनौती का डटकर सामना भी करती है।

मुख्य शब्द : *घर–परिवार, भक्तिकालीन रचनाकार, नारी चेतना आदि,*

प्रस्तावना

परिवार के दो महत्वपूर्ण स्तभ होते है– **पुरूष** और **नारी**। परिवार में नारी शक्ति का स्वरूप होती है। घर–परिवार का सम्पूर्ण वातावरण नारी के आचरण पर ही निर्भर करता है। नारी जन्मदात्री है। बच्चों का प्रजनन ही नही, बल्कि उनका पूर्ण पालन पोषण भी नारी के हाथों में ही होता है। घर में माता के द्वारा ही बच्चों को संस्कार दिये जाते है जो जीवन भर बच्चों का मार्गदर्शन करते है। नारी परिवार की खुशी का कारण बनती है, परिवार को आगे बढ़ाती है और भरण पोषण भी करती है। परिवार के लिए वह बड़े से बड़ा त्याग भी खुशी से कर देती है। दुख सहने की शक्ति नारी में पुरूषों से अधिक होती है। नारी के साहस की जितनी भी तारीफ की जाये उसके लिए शायद शब्दों की कमी महसूस हो अतः नारी सम्मान में कुछ पंक्ति मेरी तरफ से–

परिवार का मान है नारी, परिवार का सम्मान है नारी,

निरन्तर आगे बढ़ने की प्रेरणा है नारी,

लक्ष्य को भेदने की मिसाल है नारी,

जिन्दगी भर सुख पाने की हकदार है नारी,

नारी को दो हमेशा सम्मान, तभी बनेगा सुखी, समृद्ध हर इन्सान।।

नारी चाहें तों परिवार एंव समाज में व्याप्त समूल बुराइयों को नष्ट करने की क्षमता रखती है। इन बुराइयों को समाप्त करने के लिए वह निरन्तर प्रयास भी कर रही है। समाज में साहस और व्यवहार के कारण अपना नाम रोशन कर रही है। नारी परिवार में रहते हुए अनेक प्रकार की भूमिकाएं अदा करती है। वह जो चाहे भूमिका निभा सकती है वह एक माँ, पत्नी, बहू होने के साथ–साथ एक बेहतर अध्यापिका, जरूरत पडने पर स्वास्थ्य कर्मी, एक उच्च कोटी की प्रबंधक, एक अच्छी सहपाठी इनके अलावा न जाने कितने ही किरदार अपनी रोजमर्रा की जिन्दगी में निभाती है कुछेक पंक्ति इनके लिए मशहूर है – नारी एक रूप अनेक यह पंक्ति नारी पर बिलकुल सही बैठती है क्योकि नारी ही है जिसमें सहनशीलता पुरूषों से कई गुना अधिक होती है। जीवन में आने वाले हरेक दुख स्त्री सहन कर जाती है और हर चुनौती का डटकर सामना भी करती है। इन चुनौतियों का सामना करने के लिए नारी का शिक्षित होना और भी अधिक आवश्यक हो जाता है। यदि नारी शिक्षित होगी तो वह अपने परिवार की व्यवस्था और भी अच्छी तरह से कर पायेगी। शिक्षा के अभाव में महिलाओं की शक्ति का विकास नही हो पाता है, जिससे वे स्वावलंबी नही हो पातीं है। नारी अपनी भावना एंव गतिविधि की दृष्टि से वास्तव में देवी स्वरूपा ही है। नारी का महत्व प्राचीनकाल से ही रहा है और आदिकाल तक रहेगा। वर्तमान युग में तो नारी का महत्व और भी अधिक बढ गया है। आज सामाजिक, आर्थिक, नैतिक–आध्यात्मिक, राष्ट्रीय एंव अंतरराष्ट्रीय क्षेत्र में नारी ही वह केन्द्र बिंदु है जिस पर समस्त प्रगति निर्भर करती है। नारी समाज में प्रथम एंव पूजनीय है वह हरेक काल में प्रशंसा का पात्र रही है चाहे भक्तिकाल हो या फिर आधुनिक काल हरेक काल में इसका वर्णन महत्वपूर्ण रहा है।

भक्तिकाल में नारी चेतना का उदय

हिन्दी साहित्य के इतिहास में भक्तिकाल महत्वपूर्ण स्थान रखता है। आदिकाल के बाद आयें इस काल को पूर्व मध्यकाल भी कहा जाता है। अगर समयावधि की बात कहे तो 1375 ई0 से 1700 ई0 तक मानी जाती है। यह हिन्दी साहित्य का श्रेष्ठ युग है जिसको जार्ज ग्रियर्सन ने स्वर्णकाल, श्यामसुन्दर दास ने स्वर्ण युग, आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने भक्तिकाल एंव हजारी प्रसाद द्विवेदी ने लोक जागरण कहा। सम्पूर्ण साहित्य के श्रेष्ठ कवि एंव उतम रचनाएं इसी काल से विख्यात मानी जाती है। इस काल में नारी कवयित्रियों ने भी अपना उल्लेखनीय योगदान दिया है। इन महिलाओं में से कुछ को संत की उपाधि भी प्राप्त थी। इन महिलाओं ने संतो के रूप आध्यात्मिक और लौकिक अनुभवों की वाक् पटु और शक्तिशाली अभिव्यक्तियाँ सामने रखी। महिला संतो के बीच उनके जीवन के अनुभवों, उनके द्वारा अपनाएं गए आध्यात्मिक मार्ग और पारंपरिक समाज के साथ उनके संपर्क के संदर्भ में बहुत विविधता थी। जबकि उनमें से कुछ ने शुद्धता और भक्ति के आदर्शो की बात की, जबकि कुछ ने जाति की तीखी आलोचना की और घर छोड दिये।

प्राचीनकाल से धर्मशास्त्रों और स्मृतियों ने स्त्रियों को आज्ञाकारिता, शुद्धता, विनम्रता और पिता पति या पुत्र के प्रति सम्पर्ण के गुणों तक ही सीमित रखा। पितृसतात्मक धारणाओं ने महिलाओं के घूघंट जैसी प्रथाओं का रूप ले लिया, जो विशेष रूप से उतरी भारत के शासक राजपूत समूहो के बीच व्यापक थी। आध्यात्मिक के मार्ग पर चलने वाली महिलाओं ने अन्य महिलाओं को सामाजिक आडम्बरों से अलग होने में मदद की।

भक्तिकाल की भावभूमि को समझने के लिए तत्कालीन समाज की रीति को समझना एव जानना जरूरी है तो रीति–निति को जानने के लिए स्त्रियों की दशा को जानना जरूरी है। केरल जैसे कुछ क्षेत्रों और कतिपय कबायिली

जनजातियों को छोड दे तो हिंदुस्तान के अधिकांश भागों में परिवार पितृसतात्मक था। पितृसतात्मक व्यवस्था को धर्म एंव शासन दोनों संस्थाओं द्वारा प्रत्यक्ष एंव परोक्ष समर्थन था। सामंती व्यवस्था में उपभोक्ता और श्रमिक के बीच जैसा अन्तर होता था बाहय रूप से दोनों वर्ग की स्त्रियों में भी ऐसा ही अंतर था। मगर भावनात्मक और शारीरिक स्तर पर उच्च वर्ग की स्त्रियों का अधिक शोषण होता था। सांमतों और राजघरानों की स्त्रियों को शिक्षा एंव एशो आराम की सुविधा तो थी मगर उनको हर जगह आने जाने और सबसे मिलने की छूट नही थी। निम्न वर्ग की स्त्री भले ही दिन भर परिश्रम करती थी, सुविधा विहीन जीवन यापन करती थी मगर उच्च वर्ग की अपेक्षा उसे कुछ अधिक छुट थी।

उच्च वर्ग की चन्द स्त्रियों ने अपनी प्रतिभा के बल पर शासन में सक्रिय भूमिका निभायी। इस वर्ग की अधिकांश स्त्रियों की दुनियाँ हरम तक ही सीमित रहती थी, सती प्रथा, पर्दा प्रथा और बहु पत्नि प्रथा जैसी अनेक कुरीतियों का संबंध उसी वर्ग से रहा है। रानी के साथ दासी का सहवास और सती होने के लिए मजबूर की जाती थीं। निम्नवर्ग की स्त्रियां अगर उच्च वर्ग का सानिध्य नहीं पाती तो उनके सामने यह विवशता भी नही होती।

नारी चेतना के विषय में रचनाकारों के विचार

भक्तिकाल में कवियों ने नारी की निंदा और प्रशंसा दोनों की है। संयमशील और मर्यादित नारी को ईश्वरीय अवतार मानते हुए उसे पूजनीय बताया है वहीं भक्ति में बाधा उत्पन्न करने वाली और वासना में लिप्त नारी को संसार के लिए त्याज्य माना गया है। रामचरित्रमानस के आदर्श नारी पात्र आज भी सम्पूर्ण विश्व के लिए प्रेरणा स्त्रोत है। यशोदा के माध्यम से नारी के माता रूप का जो चित्र सूरदास ने खीचा है वह अपने आप में अनूठा है। इसके अलावा तुलसीदास, जायसी और कबीर दास ने भी नारी के व्यक्तित्व का अनुठा दृश्य प्रकट किया है। जो निम्न प्रकार है।

तुलसीदास की स्त्री–विषयक चेतना– तुलसीदास जी नारी को कर्त्तव्यनिष्ठ, पतिव्रत आदर्श एंव मर्यादित रूप में देखना चाहते है। इन आदर्शो के प्रतिकुल जाने पर वे निन्दा एंव भर्त्सना करने में नहीं चुकते है। वे कभी निन्दा स्वयं करते है तो कभी पात्रों के द्वारा कराते है। तुलसीदास को सामाजिक मर्यादा के विपरित आचरण स्वीकार नहीं है। नारी के प्रकृति, ह्रदय एंव चरित्र के चित्रण में गोस्वामी जी की लोक–व्यवहार निपुणता उजागर होती है। तुलसी काव्य में नारी भावना मुख्यतः दो रूपों में अभिव्यक्ति पाती है– एक नारी विषयक मान्यताओं के सैद्धान्तिक निरूपण में, द्वसरी नारी पात्रों के चरित्र चित्रण में।

सूरदास की स्त्री–विषयक चेतना– सूरदास पारिवारिक प्रेम और मातृत्व की महिमा को व्यंजित करने वाले हिन्दी के प्रथम महाकवि है। गोचारण एंव कृषि प्रधान समाज में चित्रित गोपियों एंव राधा का प्रेम सामंती नैतिकता के बन्धनों से मुक्त है। उन्मुक्त प्रेम की परिकल्पना विवाह सम्बन्धी पारम्परिक एंव सामंती दृष्टिकोण की विरोधी है। स्त्री प्रेम के सहज और उदात्त रूपों का जैसा वैविध्यपूर्ण चित्रण सूर–काव्य में मिलता है वैसा अन्यत्र दुर्लभ है।

सूर का वात्सल्य वर्णन सांमती व्यवस्था के बीच माँ की महिमा को स्थापित करने का प्रयास है। सूर की कविता पारिवारिक जीवन के प्रति अनुराग उत्पन्न करती है। यहाँ अनुराग वैवाहिक जीवन से पूर्व का है तो बाद का भी। सूर सामंती मूल्यों एंव मान्यताओं से भिन्न ढंग से प्रतिकार करते है। उनमें कबीर जैसी आक्रमता नहीं बल्कि निषेध के जरिये सांकेतिक विरोध है यहॉ राजवंशी नायक की दीर्घकालिक परम्परा को तोड़कर पशुपालक एंव गोचारक को नायकत्व सौंपा गया।

जायसी की स्त्री–विषयक चेतना– जायसी जहाँ भी अन्य धर्म और समाज का वर्णन करते हैं उसमें कहीं भी परायापन नहीं मिलता। उनका वर्णन आदि से अन्त तक मनुष्यत्व की सामान्य भाव–भूमि पर चलता है अवधी संस्कृति की सोधी गन्ध सामन्ती वैभव से लेकर ग्राम्य चित्रण

तक में हैं ग्रामीण समाज में रहे थे और किसान का जीवन व्यतीत किये थे। इसी कारण ऐसे वर्णन में अनुभव की सच्चाई और प्रमाणिकता मिलती है। यहाँ सामंती वैभव और विलास का वर्णन नहीं मिलता अपितु ग्रामीण समाज के यथार्थ व विरूपता का बोध भी होता है यह विशेषता सिर्फ जायसी की नहीं अपितु भक्तिकाल के अधिकांश कवियों की है। अवध का लोक जीवन कहाँ माधुर्य और कहाँ कड़वाहट लिए हुए है, दीर्घ साहचर्य के नाते जायसी को इसका पक्का अनुभव था।

कबीर की स्त्री–विषयक चेतना– कबीर काव्य में स्त्री का स्वतंत्र व्यक्तित्व दुर्लभ है। प्रायः स्त्री और माया को पर्याय रूप में प्रयुक्त किया गया है। प्रिय के प्रेम में ही स्त्री की सफलता और सार्थकता है। कबीर के स्त्री विषयक विचारों पर एक ओर नाथ साहित्य तो दूसरी ओर युग का प्रभाव है। मध्य कालीन भारतीय समाज में पति ही स्त्री का कुछ होता था यहाँ तक पति की मृत्यु के बाद स्त्री को जीने का भी अधिकार नहीं था। पति के अभाव में स्त्री की क्या दशा होती है, इसे कबीर ने बड़े ही मार्मिक शब्दों में व्यक्त किया है– '' **बालम आओ गेह रे, तुम बिन दुखिया देह रे।''** भाव के द्वारा कबीर ने अगर स्त्री की आंतरिक पीड़ा को पकड़ने का यहाँ पर प्रयास किया है तो शब्दार्थ के स्तर पर उसके शारिरिक पीड़ा को भी। उपयोग ही नही अपितु उपभोग की सामग्री के रूप में स्त्री को देखने वाला कबीर युग उससे एकनिष्ठ और अनन्य प्रेम की आशा रखता था।

कबीर की दृष्टि में स्त्री के सम्मान योग्य होने के लिए पतिव्रता पहली शर्त है। यह परम्परा हिन्दू धर्म के अनुकूल भी है। पतिव्रता स्त्री की मर्यादा और सम्मान की रक्षा का दायित्व कबीर ने पति के हाथों सौपा है।

उपसंहार

भक्तिकाल मूलतः सामाजिक आन्दोलन था। जो स्त्री को घर की चारदीवारी से बाहर आने का और पुरूष को वर्ण–वर्ग का बंन्धन तोडने का निमंत्रण देता है। सांमती समाज में उच्च वर्ण की नारी को घर से बाहर निकलने की अनुमति नहीं थी। फिर भी ये स्त्रियां काव्य में उभरकर सामने आयी और समाज में अपना एक स्तर बनाया। हिन्दु संस्कृति में भी स्त्री जीवन का महान उद्देश्य माता का गौरवमय पद प्राप्त करना होता है। गर्भ–धारण, प्रजनन और शिशु–पोषण के अत्यंत महत्वपूर्ण उत्तरदायित्व प्रकृति ने नारी की उपयुक्त आंतरिक विशेषताएं देखते हुए उसी को सौप दिये गये है।

नारी जीवन की सबसे बडी एंव महत्वपूर्ण गरिमा जननी पद में निहित है। नारी व्यक्ति, समाज तथा राष्ट्र की जननी ही नहीं, वह जगत की जननी है। वह गर्भ–धारण से लेकर शिशु जन्म तक आने वाली परेशानियों को स्वयं वहन करती है। शिशु जब तक स्वयं के पैर पर नही चलता, स्वयं के हाथों से नही खाता तब तक माँ अपनी छाया में छाती से लगाए रहती है। स्वयं से अधिक संतान की रक्षा और सुख–सुविधा में लगी रहती है। स्वयं गीले में सोती है तथा अपनी संतान को सूखे में सुलाती है। माँ पर शिशु की देखभाल और साफ सुथरा रखने का उत्तरदायित्व भी होता है।

जहाँ मनुष्यों के सारे बौद्धिक प्रयास निष्फल हो जाते है वहाँ नारी अपनी सहानुभूति, ममता और सह्रदयता के द्वारा अपना कार्य पूर्ण कर लेती है। पुरूषों का निकटतम संबंधी उसकी स्वयं की पत्नी ही होती है। वह सच्ची साथी और अच्छी परामर्शदात्री होती है। नारी ही पुरूषों को बुलन्दियों के रास्ते पर चलने की प्रेरणा देती है। नारी की पति से अपेक्षा इतनी होती है कि वह उसके कंधे से कंधा मिलाकर साथ चलने वाला हो, जीवन के सफर पर बढते हुए सभी सुखों की वृद्धि करने वाला हो।

एक प्रसिद्ध विद्वान के द्वारा कहा गया है कि, 'गृहिणी गृहमित्याहु न गृह गृहमुक्यते' अर्थात नारी से ही घर है, परिवार है। नारी के बिना घर को घर नही कहॉ जा सकता। नारी गृहस्थ जीवन रूपी नौका की पतवार है, वह अपने बुद्धि–बल, चरित्र–बल, अपने त्यागमय जीवन से इस नौका को थपेड़ों और भंवरों से बचाती हुई किनारे तक पहुंचाने का प्रयास करती है। नारी की सुख–सुविधा, आनन्द और उत्थान इसके सबल कन्धों पर आधरित रहते है। यदि नारी चाहे गृहस्थ जीवन को स्वर्ग बना सकती है। भारतीय नारी का एक स्वरूप गृहलक्ष्मी का है और दूसरा काली का। अन्य शब्दों में, हम यह कह सकते है कि गृहस्थ जीवन रूपी गाड़ी के पति–पत्नी के दो आधारभूत पहिए हैं। इस गाड़ी को सुचारू रूप से चलाने के लिए दोनों पहियों में स्वस्थ एंव आपसी तालमेल होना चाहिए। आदर्श नारी से केवल घर का ही उद्धार और कल्याण नही होता वरन् वह समाज और देश की भी कल्याणकारिणी होती है।

गृहकार्य दक्षता एक आदर्श गृहिणी के लिए नितांत आवश्यक है। नारी विभिन्न प्रकार के स्वादिष्ट भोजन बनाकर अपने गृहस्वामी तथा परिवार के अन्य सदस्यों को खिलाकर आदर्श गृहिणी असीम आनन्द अनुभव करती है इसके साथ–साथ घरेलु खर्चे एंव आय व्यय का लेखा–जोखा भी नारी को ही रखना होता है। घर चलाने के लिए किस चीज की कितनी मात्रा में आवश्यकता है यह सब ब्यौरा भी रखती है। ये सभी कार्य नारी के महत्वपूर्ण कार्य होते है। नारी की भूमिका परिवार में एक पंछी की तरह होती है जिस प्रकार पंछी तिनका–तिनका चुन–चुनकर अपने घोसलें को बनाती है उसी प्रकार नारी भी पाई–पाई जोड़कर घर चलाती है। आत्मनिर्भरता नारी का सर्वश्रेष्ठ गुण होता है। इसी प्रकार पशुपालन से लेकर शिशुपालन तक सभी कार्य में नारी का दक्ष होना अति आवश्यक हो जाता है। साथ ही प्रारंम्भिक चिकित्सा का ज्ञान भी नारी के लिए अति आवश्यक है। जिससे जरूरत पड़ने पर वह उचित उपचार कर सके और अनेक प्रकार की बीमारियों से स्वयं को और अपने परिवार की रक्षा कर सके। नारी हमेशा सम्मान की पात्र होती है।

सन्दर्भ ग्रन्थ

- **गुप्त,एम.(1945).** हिन्दी पुस्तक साहित्यः हिन्दुस्तान एकेडेमी, उत्तर प्रदेश, इलाहाबाद।
- **वर्मा,आर.(1958).** हिन्दी साहित्य का आलोचनात्मक इतिहासः रामनारायण लाल प्रकाशक तथा पुस्तक विक्रेता इलाहाबाद।
- **राय,जी.(2020).** हिंदी भाषा का विकासः राजकमल प्रकाशन, अक्सर ,दिल्ली।
- **वर्मा,एस.एस.(1958).** भाषा विज्ञान एंव हिंदी भाषा का इतिहासः हिंदी साहित्य संसार, नई सड़क, दिल्ली।
- **गुप्ता.एस.सी..(2007).** हिंदी शिक्षणः के.एस.के पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रब्यूटसर्स, नई दिल्ली।